जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

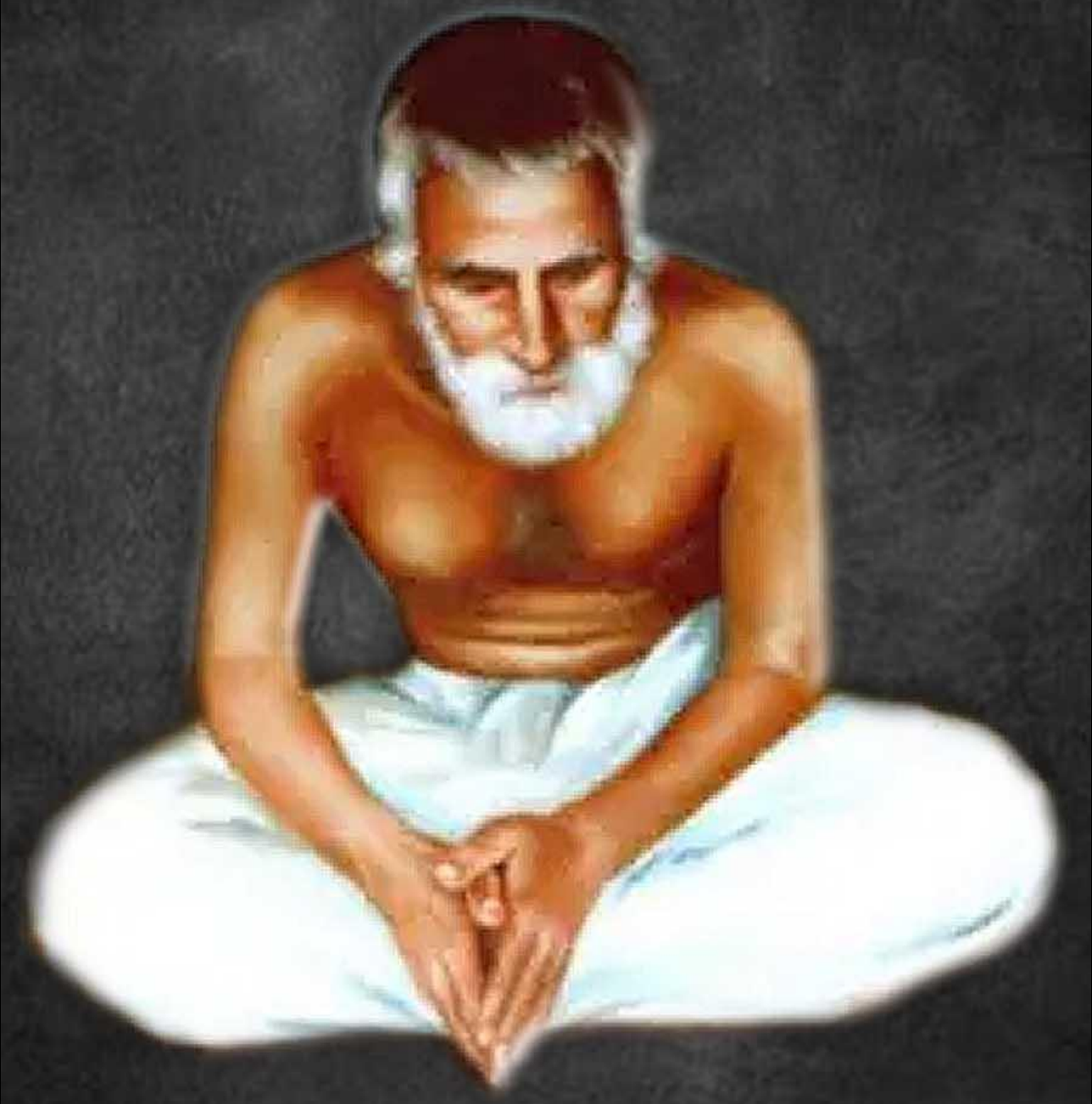

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

रिटर्न टिकट

श्रीलगुरुदेव

एक बार श्रीयुत ***बन्द्योपाध्याय, एम. ए., बी. एल., महोदय श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के श्रीचरण दर्शन करने के लिए कोलकाता से कुलिया गये। उनके किसी साथी ने श्रील बाबाजी महाराज से ***बाबू का परिचय करवाया तो बाबाजी महाराज ने उस *** बाबू को कहा— बहुत अच्छी बात है। आप यहाँ पर आए हैं, अब यहाँ रहकर हरिभजन करिए । ***बाबू ने कहा — 'मैं तो,

कोलकाता से आते समय ही रिटर्न टिकट कराकर आया हूँ।' इस पर बाबाजी महाराज ने बहुत आश्चर्यचकित होकर कहा, आप रिटर्न टिकट कराकर आए हैं ! तो मेरे पास क्यों आए हैं? वापिस चले जाने के लिए मेरे पास आने की ज़रुरत नहीं थी। जो हमेशा के लिए आकर हरिभजन करेंगे, वे ही श्रीधाम में आते हैं, मैं जानता था।'

श्रील बाबाजी महाराज ने इसके द्वारा हमें यह शिक्षा दी है कि, हम केवल कोतुहल से, साधु - वैष्णवों का चेहरा मात्र देखने के

लिए, या भजन के अतिरिक्त दूसरी दूसरी कामनाओं को लेकर साधु के पास जाते हैं, अथवा केवल मात्र स्थान घूमने के लिए तीर्थ में जाते हैं, उसके द्वारा शुद्ध साधु-संग या तीर्थ-भ्रमण का फल प्राप्त नहीं होता। तीर्थ भ्रमण का मुख्य फल है— साधु - संग लाभ करना। शुद्ध साधु - वैष्णवों के श्रीचरणों में हमेशा के लिए, बिना किसी कामना - वासना के आत्मसमर्पण न करने से यथार्थ साधु-संग नहीं होता। शुद्ध साधु के श्रीचरणों में सब कुछ समर्पित करके प्रणिपात (प्रणाम), परिप्रश्न (जिज्ञासा) और सेवा- प्रवृत्ति सहित प्रति क्षण साधु के आदर्शों का

अनुगमन ही – साधुसंग है। 'संग' का अर्थ है सम्यक् गमन। रिटर्न टिकट खरीदकर साधु - वैष्णवों के दर्शन के लिए आने से अर्थात् भोग-वृत्ति लेकर विषयों की सेवा में पुनः वापिस जाने की वृत्ति रहने से साधु के चरणों में आत्म-समर्पण नहीं होता एवं निष्कपट हरिभजन की बात भी कानों में प्रवेश नहीं करती।

श्रीलगुरुदेव